بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 26
Issue - 02

राह-ए-ईमान

फरवरी
2024 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन.....2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.....3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत.....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 5.01.2024).....8
8. पेशगोई मुस्लेह मौऊद की पृष्ठभूमि, महत्तव और मिस्दाक़.....12
9. मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व.....22
10. इस्लाम के लिए सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाह की सेवाएं.....27
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

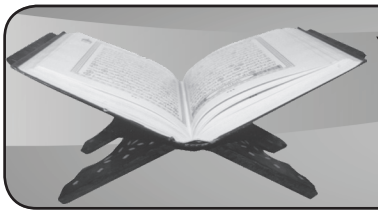

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْٓا اَوْ يُصَلَّبُوْٓا اَوْ تُقَطَّعَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ۭ ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِى الدُّنْيَا وَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ۚ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

अनुवाद:- 34-जो लोग अल्लाह तथा उस के रसूल से युद्ध करते हैं और फ़साद फैलाने के लिए (युद्ध की आग भड़काने के लिए) भागते फिरते हैं उन का उचित दण्ड यही है कि उन में से हर-एक को मौत के घाट उतार दिया जाए अथवा सलीब पर लटका कर मृत्यु दण्ड दिया जाए या उन के हाथ तथा उन के पाँव विरोधी दिशाओं से काट दिए जाएँ या उन्हें देश से निकाल दिया जाए। (यदि) यह (दण्ड मिलता तो) उन के लिए संसार में भी अपमान का कारण होता तथा परलोक में भी उन के लिए बहुत बड़ा अज़ाब निश्चित है। किन्तु इस से पहले कि तुम उन्हें काबू कर लो अगर वे तौब: कर लें तो समझ लो कि अल्लाह निश्चय ही बहुत क्षमा करने वाला एवं बार-बार दया करने वाला है। (अल माइदा : 34)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत आयशा वर्णन करती हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे मकान में ज़ुहर से पहले चार रकअत नमाज़ पढ़ते फिर लोगों को नमाज़ पढ़ाने मस्जिद चले जाते। फिर वापस आकर दो रकअत पढ़ते और इसी तरह जब आप मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ाकर घर तशरीफ लाते तो दो-दो रकअतें नमाज़ पढ़ते। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

अनुवाद- हज़रत आयशा रज़ि यल्लाहो अन्हा बयान करती हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ुहर से पहले चार और सुबह की नमाज़ से पहले दो रकअत सुन्नत कभी नहीं छोड़ते थे। (बुख़ारी किताबुस्सलात)

अनुवाद- हज़रत बराअ बिन आज़िब बताते हैं कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अठारह सफर किए। मैंने कभी नहीं देखा कि आपने ज़ुहर की नमाज़ से पहले की दो रकअत सुन्नत नमाज़ कभी छोड़ी हो। (अबू दाऊद किताबुस्सलात)

अनुवाद- हज़रत महमूद बिन लबीद वर्णन करते हैं कि एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे मुहल्ले में आए और मस्जिद में मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई। जब आपने सलाम फेरा तो नमाज़ के हाज़रीन से फरमाया कि (मग़रिब की) दो सुन्नतें अपने घर जाकर पढ़ो। (मसनद अहमद जिल्द 5 पृष्ठ 427)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व मेहदी माहूद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

निशानात (चमत्कार) किसके द्वारा घटित होते हैं

इस सवाल का जवाब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक-बार अपनी एक मुख़्तसर तक़रीर में दिया है-

आप ने फरमाया: "**निशानात (चमत्कार)** किस से जारी होते हैं?" उससे जिसके कर्म स्वयं ही चमत्कार के स्तर तक पहुँच जाएं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति खुदा तआला के साथ वफादारी करता है। उसे इस तरह वफ़ादार होना चाहिए कि उसकी वफ़ादारी असाधारण स्तर तक पहुँच जाए। उसका प्रेम और इबादत असाधारण हो। त्याग हर व्यक्ति कर सकता है और करता भी है, लेकिन उसका त्याग असामान्य होना चाहिए। तो कहने का अर्थ है कि उसके अखलाक, इबादतें (नैतिकता, पूजा) और समस्त संबंध जो खुदा तआला के साथ रखता है वह अपने अंदर एक असामान्य उदाहरण पैदा करें तो, चूंकि असामान्य का उत्तर असामान्य होता है, इसलिए अल्लाह उसके हाथ पर निशान (चमत्कार) दिखाना शुरू कर देता है। अत: जो कोई चाहता है कि उसके द्वारा चमत्कार घटित हों तो उसे चाहिए अपने कर्मों को उस स्तर तक पहुंचाए कि उनमें असामान्य परिणामों को आत्मसात करने की शक्ति पैदा होने लगे।

नबियों में यही एक निराली बात होती है कि उनका अंदरूनी ताल्लुक़ अल्लाह ताला के साथ ऐसा गहरा होता है कि किसी दूसरे का हरगिज़ नहीं होता। उनकी बंदगी ऐसा रिश्ता दिखाती है कि किसी और की बंदगी नहीं दिखा सकती। अत: उस के मुक़ाबला में रुबूबियत (मालिकीयत) अपना जलवा और प्रदर्शन भी उसी हैसियत और रंग का करती है। इबादत की मिसाल औरत जैसी होती है कि जैसे वह शर्म-ओ-हया के साथ रहती है और जब मर्द ब्याहने जाता है तो वह ऐलानिया जाता है। इसी तरह पर इबादत छुपे हुए परदे में होती है लेकिन खुदाई जब अपना जलवा दिखाती है तो फिर वह एक खुला-खुला मामला हो जाता है और उन ताल्लुक़ात का जो एक सच्चे मोमिन और बंदे और उसके रब में होते हैं असाधारण निशानों के द्वारा इज़हार होता है। नबियों के मोजिज़ात का यही राज़ है और चूँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताल्लुक़ात अल्लाह ताला के साथ तमाम नबियों से बढ़कर थे। इसलिए आपके मोजिज़ात भी सबसे बढ़े हुए हैं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-3)

★ ★ ★

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो हर युग में अपनी हुज्जत स्थापित करता है। हर पल अपनी मिल्लत का नवीनीकरण करता और हर फसाद के अवसर पर सुधारक अवतरित करता और उसकी ओर से प्रजा में बार-बार एक पथ-प्रदर्शक के बाद दूसरा पथ-प्रदर्शक आता है वह सीधा मार्ग दिखाकर अपने बन्दों पर उपकार करता और तत्पर रूहों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। वह अपनी किताब के द्वारा प्रजा का मार्ग-दर्शन अपने रहस्यों की ओर करता है और बुद्धि की उसके अनावरण तक पहुँच नहीं। वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है अपनी रूह (कलाम) डालता है और जिन पर चाहे अपनी सच्चाई और हिदायत के दरवाज़े खोल देता है जिसके कारण उस व्यक्ति को न कोई मैल प्रदूषित कर सकता है और न कोई उसके बराबर का उससे टक्कर ले सकता है। ऐसे व्यक्ति को वह पवित्र लोगों में सम्मिलित कर लेता है। वह जिसे चाहे अपने हुज़ूर (सानिध्य) में मान्यता प्रदान करता है और जिसे चाहे धिक्कार देता है, जिसे चाहे असफल करता है और जिसे चाहे अपनी महान नेमतें प्रदान कर देता है। वह जहां चाहे अपनी रिसालत रख देता है और वह जानता है कि उसका सर्वाधिक अधिकारी तथा पात्र कौन है। (सच यह है कि) सब के सब लोग मार्ग से भटके हुए हैं सिवाये उनके जिन्हें वह हिदायत दे और सब मुर्दा हैं सिवाये उनके जिन्हें वह जीवित करे, और सब अंधे हैं सिवाये उनके जिन्हें वह दृष्टि प्रदान करे। और सब भूखे हैं, सिवाये उनके जिन्हें वह भोजन उपलब्ध कराए और सब प्यासे हैं सिवाये उनके कि जिन्हें वह पिलाए, और जिसे वह हिदायत न दे वह हिदायत प्राप्त नहीं हो सकता। और दरूद एवं सलाम उसके रसूल और मक्बूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो ख़ैरुर्रुसुल और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, जो उज्ज्वल प्रकाश लाए और जिन्होंने सृष्टि को तबह कर देने वाले अंधकारों से मुक्ति प्रदान की और धर्म के पथिकों को मार्ग की कठिनाइयों से मुक्ति दी तथा उनके लिए पर्याप्त मात्रा में रास्ते का खाना एवं खर्च उपलब्द किया और उन्हें पवित्र वृक्ष के समान ऐसे पवित्र धर्मग्रन्थ प्रदान किए जिन से हर सत्याभिलाशी ने उस वृक्ष के ताज़ा फलों से भोजन प्राप्त किया और हर सौम्य स्वभाव उसकी बरकतों को प्राप्त करने की ओर प्रेरित हुआ और सदैव के अभागे एवं वंचित के अतिरिक्त कोई भी (उन बरकतों से) वंचित न रहा और सलामती हो आप सल्लम की उस पवित्र और शुद्ध सन्तान पर कि जिन के प्रकाश से सम्पूर्ण पृथ्वी प्रकाशमान हो गयी और जिनके प्रकटन से सच प्रकट हुआ। निस्सन्देह ये लोग इमामत के पूर्ण चन्द्रमा और दृढ़ता के मार्गों के भारी पर्वत थे। इन लोगों से केवल वही व्यक्ति शत्रुता रखता है जो ला'नत का पात्र और अत्याचारी हो। अल्लाह दया करे उस व्यक्ति पर जिसने उन (अहले बैत) के प्रेम को समस्त सहाबा के प्रेम के साथ एकत्र

किया और सलामती हो आप के सहाबा और आप के निष्कपट प्रेमियों पर जो आप के साए से भी बढ़कर आप के पीछे-पीछे चलने वाले और आपके पैर के जूते से अधिक आज्ञाकारी थे। उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुमूल्य पद्मराग रत्न को देख कर संसार की चमक और सज-धज को त्याग दिया और पूर्ण हार्दिक आज्ञापालन तथा फितरती सौभाग्य के साथ हर दिए गए आदेश का पालन करने के लिए उठ खड़े हुए और निर्बल हालत के बावजूद उन्होंने ख़ुदा के मार्ग में जिहाद किया और वे बैठे रहने वाले नहीं थे। उन्होंने अल्लाह के लिए पूर्ण रूप से एकांतवास ग्रहण किया और आख़िरत के ख़ज़ाने एकत्र कर लिए और संसार के माल से कुछ भी न लिया और भण्डार एकत्र करने की ओर न झुके। धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने अपने प्राण दे दिए तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सायों के पीछे-पीछे ऐसे चले कि बस लीन हो गए। उन्होंने उत्तम रब्ब की प्रसन्नता-प्राप्ति के लिए स्वयं को बेच दिया और उसकी खुशी के लिए अपने घर बार तथा प्रिय मित्रों के पृथक होने पर राज़ी हो गए। उन्होंने संसार और सांसारिक वस्तुओं से अपनी आंखें फेर लीं और उन पर एक बहुत बड़ा आकर्षण ऐसा छाया कि वे समस्त संसारों के प्रतिपालक अल्लाह की ओर खींचे चले गए।

तत्पश्चात्- तू जान ले कि इस्लामी भ्रातृ-भाव हमदर्दी और सच बोलने की मांग करता है और जिस व्यक्ति को कोई ज्ञान दिया गया फिर उसने उसे एक गुप्त रहस्य की भांति छिपाया तो वह एक बेईमान व्यक्ति है। ज्ञानों की बारीकियों का कोई अन्त नहीं तथा उनकी वास्तविकताएं असंख्य हैं। उनके प्रकटन में कोई बाधक नहीं और न ही उनके चन्द्रमाओं के लिए अन्धकारमय रातें हैं। बहुत से ज्ञान ऐसे भी हैं जो बाद में आने वालों के लिए छोड़ दिए गए हैं। वास्तविकता यह है कि मेरे रब्ब ने मुझे बहुत से रहस्य सिखाए हैं तथा (ग़ैब की) ख़बरों से सूचित किया है और उसने मुझे इस सदी का मुजद्दिद बनाया तथा अपनी विधाओं में बड़े विस्तार एवं विशालता के साथ मुझे विशिष्ट किया और मुझे अपने रसूलों का वारिस बनाया। यह उस (स्रष्टा) की शिक्षा की दानशीलता और समझे के अनुदानों में से है कि मसीह इसा इब्ने मरयम अपनी स्वाभाविक मौत से मृत्यु को प्राप्त हुए और अपने दूसरे अवतार भाइयों के समान मृत्यु पा चुके हैं और उसने मुझे ख़ुशख़बरी दी और फ़रमाया कि मसीह मौऊद जिसकी वे राह देखते हैं और महदी मसूद जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे हैं वह तू ही है। हम जो चाहते हैं, करते हैं। इसलिए तू सन्देह करने वालों में से हरगिज़ न बन। और फ़रमाया : कि हमने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया है। इस प्रकार उसने अपने रहस्य की मुहर को तोड़ा और इस बात की बारीकियों से मुझे अवगत कराया और ये इल्हाम इतनी निरन्तरता से हुए तथा ये ख़ुशख़बरियां बार-बार हुईं कि मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गया। फिर मैंने सावधानी और दूरदर्शिता का मार्ग अपनाया तथा सलामती के मार्गों की रक्षक अल्लाह की किताब की ओर लौटा तो मैंने उसको इस पर सबसे पहला गवाह पाया तथा उसके वर्णन يَاعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ (अर्थात हे ईसा निस्सन्देह मैं तुझे मृत्यु दूंगा) से बढ़कर और कौन सा वर्णन स्पष्टतम हो सकता है? विचार कर! अल्लाह तआला तुझे तेरी मृत्यु से पूर्व हिदायत दे और तुझे प्रतिभाशाली बनाए। ...शेष

(इत्मामुल हुज्जत पृष्ठ 1-7)

सम्पादकीय

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि० की एक दुआ

प्रिय पाठको ! 20 फरवरी का दिन जमात अहमदिया के इतिहास में बहुत महत्त्व रखता है, वह इस तरह कि इसी दिन 1886 ई को जमात अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने खुदा से ख़बर पाकर एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी जो मुस्लेह मौऊद के बारे में थी अर्थात आपने लिखा था कि आने वाले कुछ सालों में खुदा मुझे एक बेटा देगा जो बहुत सी विशेषताओं से युक्त होगा। तो ठीक तीन साल के भीतर वह लड़का आपके घर पैदा हुआ जिसका नाम मिर्ज़ा महमूद अहमद रखा गया, और यह आगे चल कर जमात अहमदिया के दूसरे खलीफा नियुक्त हुए और 52 साल तक आपने खिलाफ़त की। संक्षेप में इस भविष्यवाणी के कुछ शब्द इस प्रकार हैं -

"ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर समर्थ है...मुझको अपने इलहाम (ईशवाणी) से संबोधित करके फ़र्माया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा...अत: तुझे ख़ुशख़बरी हो कि एक प्रतापी और पवित्र लड़का तुझे दिया जायेगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा।.. उसको पवित्र आत्मा दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है।.. वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़स अर्थात् (मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की कृपा व स्वाभिमान ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से परिपूर्ण किया जायेगा।... हम उसमें अपनी रूह (आत्मा) डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की आज़ादी का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाऐंगी...।"

तो हज़रत मुसलेह मौऊद आपके द्वारा की हुई एक दुआ मैं आज यहाँ पाठकों के लिए प्रस्तुत करना चाहता हूँ जो हमारे जैसे बहुत लोगों के लिए कहीं न कहीं मार्गदर्शन सिद्ध होगी कि खुदा से हमें कैसे संबोधित होना चाहिए। वह दुआ यह है :

"ए मेरे मालिक मेरे क़ादिर ख़ुदा, मेरे प्यारे मौला मेरे रहनुमा। ए ज़मीन ओ आसमान के पैदा करने वाले। हे मौसम और हवा के मालिक! ए वो ख़ुदा जिसने आदम से लेकर हज़रत ईसा तक लाखों मार्गदर्शकों और करोड़ों रहनुमाओं को दुनिया की हिदायत के लिए भेजा। ए वो बुलन्द ओ बाला हस्ती जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसा अज़ीमुश्शान रसूल भेजा। ए वो रहमान जिसने मसीह जैसा रहनुमा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों में पैदा किया। ए नूर के पैदा करने वाले, ए अँधेरों के मिटाने वाले! तेरे सामने, हाँ सिर्फ़ तेरे ही सामने मुझ जैसा ज़लील बंदा झुकता और निवेदन करता है कि मेरी पुकार सुन और क़बूल कर क्योंकि तेरे ही

वादों ने मुझे जुर्रत दिलाई है कि मैं तेरे आगे कुछ अर्ज़ करने की हिम्मत करूँ। मैं कुछ न था तू ने मुझे बनाया। मैं अदम में था तू मुझे वजूद में लाया। मेरी परवरिश के लिए अर्बा अनासिर (वायु, अग्नि, जल, पृथिवी) बनाए और मेरी देख भाल के लिए इन्सान को पैदा किया जब में अपनी ज़रूरतों को बयान तक न कर सकता था। तू ने मेरे लिए वह इन्सान मुक़र्रर किए जो मेरी फ़िक्र ख़ुद करते थे। फिर मुझे तरक़्क़ी दी और मेरे रिज़्क़ को बढ़ाया। ए मेरी जान! हाँ ए मेरी जान तू ने आदम को मेरा बाप बनने का हुक्म दिया और हव्वा को मेरी माँ मुक़र्रर किया। और अपने ग़ुलामों में से एक ग़ुलाम को जो तेरे हुज़ूर इज़्ज़त से देखा जाता था, इसलिए मुक़र्रर किया कि वो मुझ जैसे नासमझ और नादान और कम फ़हम इन्सान के लिए तेरे दरबार में सिफ़ारिश करे और तेरे रहम को मेरे लिए हासिल करे। मैं गुनाहगार था तू ने परदापोषी से काम लिया। मैं ख़ताकार था तू ने माफ किया। हर एक तकलीफ़ और दुख में मेरा साथ दिया। जब कभी मुझ पर मुसीबत पड़ी तू ने मेरी मदद की और जब कभी मैं गुमराह होने लगा तू ने मेरा हाथ पकड़ लिया। बावजूद मेरी शरारतों के तू ने अनदेखा किया। और बावजूद मेरे दूर जाने के तू मेरे क़रीब हुआ। मैं तेरे नाम से ग़ाफ़िल था मगर तू ने मुझे याद रखा। इन मौक़ों पर जहां माँ बाप और सगे संबंधी और दोस्त ग़मगुसार मदद से क़ासिर होते हैं, तू ने अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाया और मेरी मदद की। मैं ग़मगीन हुआ तो तू ने मुझे ख़ुश किया। मेरा दिल उदास हुआ तो तू ने मुझे खुश किया । मैं रोया तो तू ने मुझे हँसाया। कोई होगा जो जुदाई में तड़पता हो, मुझे तो तू ने ख़ुद ही चेहरा दिखाया। तू ने मुझसे वादे किए और पूरे किए और कभी नहीं हुआ कि तुझसे अपने इक़रारों के पूरा करने में कोताही हुई हो। मैंने भी तुझसे वाअदे किए और तोड़े मगर तू ने इस का कुछ ख़्याल नहीं किया। मैं नहीं देखता कि मुझसे ज़्यादा गुनहगार कोई और भी हो और मैं नहीं जानता कि मुझसे ज़्यादा मेहरबान तू किसी और गुनहगार पर भी हो। तेरे जैसा प्यार करने वाला वहम-ओ-गुमान में भी नहीं आ सकता। हाँ तेरे जैसा शफ़ीक़ वहम-ओ-गुमान में भी नहीं आ सकता। जब मैं तेरे सामने आकर गिड़गिड़ाया और रोया तो तू ने मेरी आवाज़ सुनी और क़बूल की। मैं नहीं जानता कि तू ने कभी मेरी बेक़रारी की दुआ रद्द की हो। तो ए मेरे ख़ुदा मैं निहायत दर्द-ए-दिल से और सच्ची तड़प के साथ तेरे हुज़ूर में गिरता और सजदा करता हूँ और अर्ज़ करता हूँ कि मेरी दुआ को सुन और मेरी पुकार को पहुंच। ए मेरे क़ुद्दूस ख़ुदा मेरी क़ौम हलाक हो रही है उसे हलाकत से बचा। अगर वो अहमदी कहलाते हैं तो मुझे उनसे क्या ताल्लुक़ जब तक उनके दिल और सीने साफ़ न हों और वो तेरी मुहब्बत में डूबे हुए न हों। मुझे उनसे क्या ग़रज़? सो ए मेरे रब अपनी सिफ़ात रहमानियत और रहीमीयत को जोश में ला और उनको पाक कर दे। सहाबा जैसा सा जोश-ओ-ख़ुरोश उनमें पैदा हो। और वो तेरे दीन के लिए बेक़रार हो जाएं, उनके कर्म उनके कथन से ज़्यादा उम्दा और साफ़ हूँ। वो तेरे प्यारे चेहरे पर क़ुर्बान हों और नबी करीम पर फ़िदा। तेरे मसीह की दुआएं उनके हक़ में क़बूल हों और उस की पाक और सच्ची तालीम उनके दिलों में घर कर जाये। ए मेरे ख़ुदा मेरी क़ौम को तमाम इबतिलाओं और दुखों से बचा और भिन्न भिन्न प्रकार की मुसीबतों से उन्हें महफ़ूज़ रख। उनमें बड़े बड़े बुज़ुर्ग पैदा कर। ये एक क़ौम हो जाएं जो तू ने पसंद कर ली हो। और ये एक गिरोह हो जिसको तू अपने लिए मख़सूस कर ले। शैतान के तसल्लुत से महफ़ूज़ रहें और हमेशा मलाइका का नुज़ूल उन पर होता रहे। इस क़ौम को दीन-ओ-दुनिया में मुबारक कर, मुबारक कर। आमीन सुम्मा आमीन या रब्बबुल आलमीन। (सवानिह फ़ज़ले उमर जिल्द 1 पृष्ठ 309- 312)

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 5.1.2024
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

वक़्फ़े जदीद के छियासठवें (66) साल में जमाअत के लोगों की ओर से पेश की जाने वाली धन की क़ुर्बानियों का वर्णन तथा सतासठवें (67) वर्ष के आरम्भ होने की घोषणा।
फ़लिस्तीन के पीड़ितों के लिए दुआ की पुन: तहरीक।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ○ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: और सूर: सफ़ की ११ से १३ तक आयतों की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

इन आयतों का अनुवाद है कि हे लोगो! क्या तुम्हें एक ऐसा व्यापार न बताऊँ जो तुम्हें एक कष्टदायक यातना से मुक्ति दे। तुम जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हो तथा उसके रास्ते में अपने माल एवं अपनी जानों के साथ जिहाद करते हो, यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है यदि तुम ज्ञान रखते हो। वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा तथा तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल करेगा जिन के दामन में नहरें बहती हैं और ऐसे पवित्र घरों में, जो सदैव रहने वाली जन्नतों में हैं। यह अत्यंत महान सफलता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फ़रमाया कि मैं भी मसीहे मूसवी के पद्चिन्ह पर भेजा गया हूँ तथा जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दया एवं क्षमा की शिक्षा दी थी, मैं भी रहम एवं क्षमा शीलता तथा सन्धि एवं सहानुभूति की इस्लामी शिक्षा के साथ मसीहे मुहम्मदी के रूप में भेजा गया हूँ। यह ज़माना अब क़ुर्आन करीम की शिक्षाओं को प्रकाशित करने का ज़माना

है, तलवार के जिहाद का अब ज़माना नहीं है परन्तु इस्लाम की शिक्षाओं को फैलाने के लिए क़लम का जिहाद एवं तबलीग़ का जिहाद जारी है तथा इस जिहाद को जारी रखने के लिए भी जान, माल एवं प्रतिष्ठा को बलिदान करने की उसी प्रकार आवश्यकता है जिस प्रकार इस्लाम के आरम्भ में क़ुर्बानियों की आवश्यकता थी।

यह ज़माना जिसमें आर्थिक प्रतिस्पर्धा है तथा इसके लिए अत्यंत प्रयत्न हो रहे हैं दीन को ये लोग भूल बैठे हैं तथा संसार में अधिक रूचि है। व्यापारों में एक दूसरे से आगे बढऩा तथा सुख सुविधाओं की प्राप्ति के लिए दुनिया अपना ध्यान चरम सीमा तक पहुंचाने की कोशिश कर रही है। ऐसे में दीन के प्रचार प्रसार के लिए बलिदान देना अल्लाह तआला की निकटता पाने का अति उत्तम साधन तथा सफल व्यापार है। यही अल्लाह तआला ने इन आयतों में वर्णन फ़रमाया है।

अतएव यह ज़माना जो मसीह मौऊद का ज़माना है, इस ज़माने में विशेष रूप से धन से संघर्ष करने का एक महत्त्व पूर्ण काम है। अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में धन की क़ुर्बानी की ओर अनेक स्थानों पर ध्यान दिलाया है। फ़रमाया- तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते। इसी तरह फ़रमाया कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो तथा अपने हाथों से अपने आपको नष्ट न करो। अल्लाह तआला किसी का उधार नहीं रखता, उसने ऐसे व्यापार की सूचना दी है जो दुनिया एवं आखिरत की सफ़लता पर पहुंचती है। नेक धारणा से इस राह में की गई क़ुर्बानी को ख़ुदा तआला कई गुणा बढ़ाता है, यही उसने क़ुर्आन करीम में भी फ़रमाया है।

आज अल्लाह तआला की कृपा से अहमदी ही हैं जो दीन के लिए धन के बलिदान के महत्त्व को समझते हैं। जमाअत की प्रगति इस बात की गवाह है कि निर्धन लोगों के धन के बलिदान को अल्लाह तआला कितना अधिक फल देता है। ऐसे उदाहरण मैं प्राय: बयान करता रहता हूँ, आज भी बयान करूँगा। ये उदाहरण समृद्ध अहमदियों को इस तरफ़ ध्यान दिलाने वाले होने चाहिएँ, वे देखें कि उनके स्तर क्या हैं।

आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आग से बचो, चाहे आधी खजूर देकर ही। इसी तरह फ़रमाया कि कंजूसी से बचो, यह कंजूसी ही है जिसने पहली क़ौमों का विनाश किया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबियों का तो यह हाल था कि जब कोई धन के बलिदान की प्रेरणा होती तो मज़दूरी करने निकल खड़े होते और जो कुछ कमाई होती वह अल्लाह की राह में पेश कर देते। ऐसे निष्ठावान अल्लाह तआला ने आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलै. को भी प्रदान किए हैं। अहमदियत का इतिहास ऐसी अनेक घटनाओं से भरा पड़ा है। अल्लाह तआला ने उन क़ुर्बानी करने वालों की निष्ठा को व्यर्थ नहीं जाने दिया। अत: इन सहाबा रज़ी. तथा क़ुर्बानी करने वालों की संतानों को भी याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने इन्हें जो कुछ भी अता फ़रमाया है यह उन पूर्वजों के बलिदानों का फल है। अल्लाह तआला की कृपा से आज जमाअत के अधिकांश लोग क़ुर्बानी करने वाले हैं। अफ़रीक़ा में

भी ऐसे उदाहरण हैं तथा पाकिस्तान में भी, हिन्दुस्तान से भी ऐसे उदाहरण सामने आते रहते हैं।

सय्यदना हुज़ूरे अनवर ने रिपब्लिक ऑफ़ सैन्ट्रल अफ़रीक़ा, क़ज़ाकिस्तान, क़रगिस्तान, फ़िल्पाईन, कैमरून, तंज़ानिया, टोगो, इन्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया सहित विश्व के विभिन्न देशों के श्रद्धालुओं के चन्दा वक्फ़े जदीद से सम्बंधित ईमान को बढ़ाने वाली घटनाएँ बयान फ़रमाईं तथा इस श्रंखला में आगे फ़रमाया-

सावंतवाड़ी इन्डिया के एक अहमदी हैं सिराज साहब, उन्होंने कहा कि मैंने धन की क़ुर्बानी की बरकतों को अपनी आँखों से देखा है। वक़फ़े जदीद के चन्दे देने शेष रह गए थे, कोविड की महामारी के कारण। दो तीन साल से इन श्रीमान जी की लकडियाँ बारिश के पानी से नष्ट हो रही थीं। ये ख़रीदने वाला ढूंडते रहे, कोई नहीं मिल रहा था। श्रीमान जी कहते हैं कि जब इंस्पैक्टर वक्फ़े जदीद आए तथा चन्दे का मुतालबा किया तो इन्होंने दो हज़ार रुपए तुरन्त निकला कर अदा कर दिए। कहते हैं- दो दिन के अन्दर अन्दर जो ख़रीदार मूल्य निश्चित होने के बावजूद सामान नहीं ले रहा था, अचानक आकर बीस हज़ार रुपए देकर पूरा माल ले गया और ये कहते हैं कि मेरा तो यही ईमान है कि चन्दे की बरकत से अल्लाह तआला ने दो हज़ार को बढ़ा कर बीस हज़ार मुझे वापस लौटा दिए, अन्यथा जो सामान वर्षों से नष्ट हो रहा था वह आगे भी नष्ट हो सकता था।

हुज़ूरे अनवर ने पूरे विश्व से माल की क़ुर्बानी के ईमान वर्धक वृत्तांत बयान करने के बाद फ़रमाया कि कैसे कैसे सुन्दर श्रद्धावान अल्लाह तआला ने दुनिया के कोने कोने में हज़रत मसीह मौऊद अलै. को दिए हैं। यह एक लम्बी सूचि है, मेरे लिए कठिन था कि किसका वर्णन करूँ तथा किसका छोडूँ। जिनके वृत्तांत मैं बयान नहीं कर सका उनकी श्रद्धा एवं निष्ठा में कोई कमी नहीं है। इन लोगों ने अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए ये क़ुर्बानियाँ की हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं इस लिए सतर्क खड़ा हूँ कि आप लोग अपने पवित्र धन के द्वारा दीन के अभियानों में मेरी सहायता करें तथा हर एक व्यक्ति जहाँ तक ख़ुदा तआला ने उसको सामर्थ्य एवं शक्ति दी है, इस राह में कोताही न करे, और अल्लाह तआला तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने धन को अधिक महत्त्वपूर्ण न समझे और मैं फिर जहाँ तक मेरे वश में है अपने लेखों के द्वारा इन शिक्षाओं तथा बरकतों को ऐशिया एवं यूरोप के देशों में फैलाऊँ जो ख़ुदा तआला की पवित्र आत्मा ने मुझे दी हैं।

हुज़ूरे अनवर ने इसके बाद वक्फ़े जदीद के छियासठवें साल की समाप्ति तथा सतासठवें साल के आरम्भ होने की घोषणा करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअते अहमदिया आलमगीर ने इस वर्ष में एक करोड़ उनत्तीस लाख इकतालीस हज़ार पाउंड राशि की क़ुर्बानी वक्फ़े जदीद में पेश की, यह वसूली गत वर्ष की तुलना में सात लाख अट्ठारह हज़ार पाउंड अधिक है।

बर्तानिया का इस साल सामूहिक वसूली की दृष्टि से पहला स्थान है, फिर कैनेडा है, कैनेडा

ने भी अच्छी बढ़ौतरी की तथा इन्होंने शामिल होने वालों में अधिक उन्नति की है, यह इनका इस साल अत्यधिक प्रशंसा योग्य प्रयास है, फिर जर्मनी है नम्बर तीन, फिर नम्बर चार अमरीका, पाकिस्तान, भारत, आस्ट्रेलिया, मिडिल ईस्ट की एक जमाअत, इन्डोनेशिया, मिडिल ईस्ट की फिर एक जमाअत है तथा बैल्जियम है।

अफ़रीक़ा की जमाअतों में नम्बर एक पर मारेशिस, फिर घाना है, बर्कीना फ़ासो है। बर्कीना फ़ासों देश की यद्यपि स्थिति भी ख़राब है परन्तु बावजूद इसके तीसरा स्थान है अफ़रीक़ा में। तंज़ानिया है, नाईजेरिया है, लाईबेरिया, फिर गैम्बिया, माली, योगेंडा तथा सीरालियोन।

शामिल होने वालों की संख्या पन्द्रह लाख पचास हज़ार है। अल्लाह की फ़ज़ूल से इस साल चवालीस हज़ार नए श्रद्धावान शामिल हुए हैं। शमिल होने वालों की सूचि में कैनेडा नम्बर एक पर है, फिर तंज़ानिया, फिर कैमरोन, फिर गैम्बिया, नाईजेरिया, गिनी बसाव तथा कांगो कंशासा।
भारत के दस प्रदेश जो हैं, नम्बर एक पर केरला, फिर तमिलनाडु, जम्मु कशमीर, तिलंगाना, कर्नाटक, उडीशा, पंजाब, वैस्ट बंगाल, देहली तथा महाराष्ट्र।

और दस जमाअते जो हैं, वसूली की दृष्टि से उनमें हैद्राबाद नम्बर एक, कोएम्बटूर, क़ादियान, कालीकट, मंजेरी, बैंगलौर, मेला पालियम, कलकत्ता, करुलाई तथा केरंग।
अल्लाह तआला इन सबके जान व माल में अत्यंत बरकतें अता फ़रमाए।

ख़ुत्ब: के अन्त में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- फ़लिस्तीन के लिए तो मैं दुआ की तहरीक करता ही रहता हूँ, अब भी उनको याद रखें। पहले भी मैंने कहा था कि अपने अपने दोस्तों में उनके अधिकारों के लिए आवाज़ उठाते भी रहें। लोगों को बताते भी रहें, विशेष रूप से राजनैतिज्ञों को। इसराईल की सरकार तो अपने अत्याचारों से बाज़ आने वाली नहीं लगती बल्कि अब तो यह उन्होंने सैनिकों को सन्देश दिया है कि 2024 का साल भी युद्ध का साल है। अल्लाह तआला फ़लिस्तीनियों पर रहम फ़रमाए। इससे अब यह भी कहा जाने लग गया है कि रीजन में भी युद्ध फैलने की आशंका है तथा फिर विश्व युद्ध भी हो सकता है। बैरूत के आस पास भी उन्होंने बम्बारी शुरु कर दी है, बढ़ते ही चले जा रहे हैं अब ये, यद्यपि प्रत्यक्षत: अमरीका की सरकार उनको यही कह रही है कि अपने युद्ध को कम करो, परन्तु ये केवल शब्द ही लगते हैं, दबी हुई आवाज़ें हैं इनकी। असल योजना तो उनकी यही लगती है कि ग़ाज़ा से फ़लिस्तीनियों को बाहर निकाल दिया जाए तथा इस धरती पर क़ब्ज़ा कर ले। अल्लाह तआला फ़लिस्तीनियों पर रहम फ़रमाए तथा मुसलमानों पर भी दया करे, इनको भी बुद्धि एवं विवेक दे और इस तरफ़ भी ये ध्यान दें कि ज़माने के इमाम की आवाज़ को सुनें और मानें।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

पेशगोई मुस्लेह मौऊद की पृष्ठभूमि, महत्त्व और मिस्दाक़

(तहरीरात हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोशनी में)

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

सर्वशक्तिमान कृपालु ख़ुदा ने इस ज़माने में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस्लाम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त के जो निशान अता फ़रमाए उनमें एक बहुत बड़ा निशान मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी है। इस भविष्यवाणी की पृष्ठभूमि क्या थी? इस का कितना महत्त्व और अज़मत है? और इस भविष्यवाणी से कौन मुराद है? इन समस्त सवालों के जवाब और तफ़सील हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात में मौजूद है।

भविष्यवाणी की पृष्ठभूमि

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम की महान किताब "बराहीन-ए-अहमदिया" के मंज़र-ए-आम पर आने से एक तरफ़ आलम-ए-इस्लाम ख़ुशियों की लहरों में था और दूसरी तरफ़ मुख़ालेफ़ीन-ए-इस्लाम में एक खलबली मच गई थी। हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने इसी किताब में दुनिया को संबोधित कर के यह ख़ुशख़बरी दी

"ख़ुदावंद तआला ने इस विनीत बंदे को इस ज़माना में पैदा करके और सैंकड़ों निशान आसमानी और परोक्ष की भविष्यवाणी और मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ प्रदान करके और सैंकड़ों बौद्धिक प्रमाणों का ज्ञान देकर यह इरादा फ़रमाया है कि ताकि क़ुरआन की शिक्षा को हर क़ौम और हर मुल्क में प्रकाशित और प्रसारित करे और अपनी हुज्जत उन पर पूरी करे।''

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी खाजाएन 1 पृष्ठ 596 हाशिया दर हाशिया)

इस भविष्यवाणी का ऐलान आपने न केवल भारत में किया बल्कि पुस्तकों के माध्यम से समस्त संसार में इस पैग़ाम को पहुंचाया और अपनी ताक़त के मुताबिक़ जहां तक हो सका मुख़ालेफ़ीन इस्लाम पर समझने की अंतिम प्रयास को पूर्ण किया। अब जबकि इस्लाम की हक़्क़ानियत और सदाक़त का डंका सारे संसार में बज रहा था और हर एक मुख़ालिफ़ को उसके ज़िंदा निशानात देखने की दावत-ए-आम थी कि इसी दौरान 1885 ई. में साहूकार और दीगर हिंदू साहिबान क़ादियान का एक ख़त हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में मौसूल हुआ जिसमें यह मुतालबा किया गया था कि

"जिस हालत में आपने लंडन और अमरीका तक इस मज़मून के रजिस्ट्री शूदा ख़त भेजे हैं कि जो तालिब सादिक़ हो और एक साल तक हमारे पास आकर क़ादियान में ठहरे तो ख़ुदाए तआला उस को ऐसे निशान इस्लाम की सच्चाई के ऐसे निशान ज़रूर दिखाएगा कि जो इन्सान की शक्ति से बालातर हों। सो हम लोग जो आपके पड़ोसी और एक शहरी हैं, लंदन और अमरीक वालों से ज़्यादा-तर हक़दार हैं लेकिन हम लोग ऐसे निशानों को ही काफी समझते हैं जिनमें ज़मीन और आसमान के ज़ेर-ओ-ज़बर करने की हाजत नहीं और न क़ुदरत के कानूनों को तोड़ने की कुछ ज़रूरत। हाँ ऐसे निशान ज़रूर चाहिऐं जो इन्सानी ताक़तों से बालातर हों

जिन से यह मालूम हो सके कि वह सच्चा और पाक परमेश्वर बिला वजह आपकी धार्मिक सत्यता के अनुकूल मुहब्बत और कृपा की राह से आपकी दुआओं को क़बूल कर लेता है और क़बूलियत-ए-दुआ से पूर्व पूरे होने की जानकारी प्रदान करता है या आपको अपने कुछ विशेष रहस्यों से अवगत करता है और बतौर भविष्यवाणी इन गुप्त भेदों की ख़बर आपको देता है या ऐसे अजीब तौर से आपकी मदद और हिमायत करता है जैसे वह क़दीम से अपने बर्गज़ीदों और मुक़र्रिबों और भगतों और ख़ास बंदों से करता है .. और साल जो निशानों के दिखाने के लिए निर्धारित किया गया है वह सितंबर 1885 ई. के आरंभ से शुमार किया जाएगा जिसका अंत सितंबर 1886 ई. के अन्त तक हो जाएगा।

(मजमूआ इश्तेहारात, भाग प्रथम, पृष्ठ 92)

इस ख़त के आख़िर पर दस हिंदू साहिबान के नाम दर्ज हैं। इस ख़त के प्राप्त होने पर हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने जो उत्तर तहरीर फ़रमाया

"आप साहिबों का पत्र जिसमें आपने आसमानी निशानों के देखने के लिए निवेदन किया है, मुझ को मिला। चूँकि यह ख़त सरासर इन्साफ़-ओ-हक़ जोई पर आधारित है और एक जमाअत तालिब हक़ ने जो पूरे दस हैं इस को लिखा है इस लिए धन्यवाद सहित इस के मज़मून को क़बूल स्वीकार करता हूँ और आपसे अह्द करता हूँ कि अगर आप साहिबान इन वादों के पाबंद रहेंगे कि जो अपने ख़त में आप लोग कर चुके हैं तो ज़रूर ख़ुदाए क़ादिर के समर्थन और सहायता से एक साल तक कोई ऐसा निशान आपको दिखलाया जाएगा जो इन्सानी ताक़त से बालातर हो। यह विनीत आप साहिबों के इन्साफ़ से पूर्ण ख़त के पढ़ने से बहुत खुश हुआ।''

(मजमूआ इश्तेहारात, भाग प्रथम, पृष्ठ 95)

जैसा कि हज़रत अकदस के इस इश्तेहार से ज़ाहिर है आप हिंदूओं के इस ख़त से ख़ुश थे कि इस्लाम की सदाक़त में निशान का मुतालिबा किया गया है इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस मुतालिबा को लेकर उसी वाहिद-ओ-ला शरीक ख़ुदा की तरफ़ तवज्जा की जिसकी सहायता और समर्थन कि पक्के वादों से सूचना पाकर आप ने इस्लाम की सच्चाई का इस दौर में ऐलान किया था, और निहायत दर्द और पीड़ा और विनती से इस निशान के लिए दुआएं कीं। आपने किसी भी किस्म के ख़लल से बचने और दुआओं में यकसूई पैदा करने के लिए ऐकांत धारण करने का इरादा किया और इस उद्देश्य के लिए अपने घर-बार और रिश्तेदारों से दूर होशियारपुर में चालीस दिन इबादत (चिल्लाकशी) की और पूरे दर्द और ध्यान के साथ अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआएं कीं। ख़ुदाए रहीम-ओ-करीम ने आप की इस तड़प और इस्लाम की सदाक़त के लिए बेचैनी को देखकर आपको तसल्ली दी और आपकी दुआओं को शरफ़ क़बूलीयत बख़्शते हुए मुस्लेह मौऊद की अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी आपको फ़रमाई।

भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद पर हिंदुओं और मुसलमानों के कुछ फिरकों की तरफ़ से आरोप भी लगाए गए लेकिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने बज़रीया इश्तेहार पत्राचार उनके जवाबात दिए। हज़रत अकदस की इस भविष्यवाणी के बाद एक लड़की की पैदाइश हुई इसलिए हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम पर एतराज़ात की नौईयत यही थी कि भविष्यवाणी लड़के की थी और पैदा लड़की हुई। लेकिन इस से ज़्यादा इस बात का शोर

डाला गया कि घर में लड़का पैदा हो जाना क्या निशान हुआ? शादी के बाद बच्चे होना यही क़ानून-ए-क़ुदरत है इत्यादि। लेकिन भविष्यवाणी पर नज़र डालने से साफ़ मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने नौ साल की मीयाद के अंदर अंदर एक महान बेटे की पैदाइश की ख़बर दी थी उस के अलावा दीगर औलाद की पैदाइश का मना नहीं किया गया था कि मौऊद बेटे के अलावा और कोई बच्चा पैदा नहीं होगा। यद्यपि शादी के बाद औलाद होना क़ानून-ए-क़ुदरत ज़रूर है लेकिन कोई भी फ़र्द अपने बारे में समय से पूर्व इस बात का हतमी दावा नहीं कर सकता यहां तो न केवल बेटे की पैदाइश के इलाही वादे का हतमी ऐलान था बल्कि महान और अज़ीम और बेशुमार ख़ूबियों वाले बेटे का ऐलान था जिसके ज़रीये हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी के बाद दीन-ए-इस्लाम की अज़ीम ख़िदमत और इस के दुनिया में फैलने का भी वर्णन था

बशीर अव्वल का जन्म और हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की वज़ाहत

पहली बेटी की पैदाइश के बाद 7 अगस्त 1887 ई. को हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम के घर में बेटा पैदा हुआ जिसका नाम बशीर रखा गया। साहिबज़ादा बशीर अव्वल के जन्म से क़बल उसके गर्भ के दौरान ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने एक विज्ञापन 8 अप्रैल 1886 ई. में इस बात का निर्णय किया कि

"यह ज़ाहिर नहीं किया गया कि जो अब पैदा होगा यह वही लड़का है या वह किसी और वक़्त में नौ बरस के अरसा में पैदा होगा।" (मजमूआ इश्तेहारात, भाग प्रथम, पृष्ठ 117)

फिर साहिबज़ादा बशीर अव्वल की पैदाइश पर मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के यह पूछने पर कि क्या यह नवजात बच्चा वही है जिसका भविष्यवाणी में वादा है? हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उत्तर दिया-

"नए बच्चे के विषय में मैंने किसी अख़बार में यह मज़मून नहीं छपवाया कि यह वही लड़का है जिसके बारे में 20 फ़रवरी 1886 ई. के इश्तेहारात में वर्णन किया गया है।"

(मकतूबाते अहमद, भाग प्रथम, पृष्ठ 306 न्यू ऐडीशन 2008 ई. क़ादियान)

हज़रत अकदस की नज़र में भविष्यवाणी का महत्त्व और महानता

इसी ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के वादों और भविष्यवाणियों पर आधारित एक किताब बनाम "सिराज-ए-मुनीर" लिखने का इरादा फ़रमाया जिसमें इलावा और भविष्यवाणियों के मौलूद बेटे की भविष्यवाणी का वर्णन करना भी मक़सूद था। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम के नाम एक ख़त में यह तजवीज़ दी कि इस मौऊद बेटे की भविष्यवाणी को रिसाला सिराज-ए-मुनीर में दर्ज न किया जाए। हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने जो उत्तर तहरीर फ़रमाया- और जो आप ने पहले ख़त में वर्णन फ़रमाया था कि बेटे की भविष्यवाणी को रिसाला में दर्ज करना मुनासिब नहीं, मैंने अब तक आपकी ख़िदमत में इस वजह से इस का उत्तर नहीं लिखा कि ख़ुदा तआला ने इस मामले में मेरी राय को आपकी राय से मुत्तफ़िक़ नहीं किया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजेऊन। मुझको अल्लाह की ओर से इस बारे में ऐलान व इशाअत का हुक्म है और जैसा कि मेरे आक़ा मुहसिन ने मुझे इरशाद फ़रमाया है मैं वही काम करने के लिए मजबूर हूँ। मुझे इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता कि दुनियावी मस्लिहत का क्या तक़ाज़ा है और न मुझे दुनिया की इज़्ज़त-ओ-ज़िल्लत से कुछ सरोकार है और न उस की कुछ परवाह और न उस का कुछ भय

है। मैं जानता हूँ कि जिन बातों के प्रकाशित करने के लिए मुझे आदेश् दिया गया है हर-चंद ये बदज़नी से भरा हुआ ज़माना उन को कैसी ही तहक़ीर की निगाह से देखे लेकिन आने वाला ज़माना इस से बहुत सा फ़ायदा उठाएगा। (मकतूबाते अहमद,भाग प्रथम, पृष्ठ 304-305 न्यू एडिशन)

हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की इस इस्तिक़ामत और इस्तिक़लाल को देखकर और यह जान कर कि आप अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी को निकालने पर राज़ी नहीं, मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब ने एक और ख़त भेजा और लिखा कि ऐसी भविष्यवाणियों से इस्लाम को फाइदा नहीं और मुसलमानों का अपमान होगा। और मौलवी-साहब ने इस हतक से बचने के लिए इस दफ़ा यह मश्वरा दिया कि सिराज-ए-मुनीर छपवाने का इरादा ही फ़िलहाल छोड़ दिया जाए। हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने उत्तर दिया-

"आप फ़रमाते हैं कि सिराज-ए-मुनीर में इसी तौर की भविष्यवाणी हैं तो मेरी राय है कि सिराज-ए-मुनीर का छापना स्थगित रखा जाए क्योंकि ऐसी किताब से मुसलमानों का बहुत अपमान होगा। इस के उत्तर में अर्ज़ करता हूँ कि निसंदेह सिराज-ए-मुनीर में इसी तरह की भविष्यवाणी हैं बल्कि सबसे बढ़कर यही भविष्यवाणी है परंतु दूसरा फ़िक़रा आपका कि ऐसी भविष्यवाणियों से मुसलमानों का बहुत अपमान होगा, फ़िरासत सहीहा (दूरदर्शिता) पर आधारित नहीं है और आपका यह कथन कि "मुझे सिर्फ यह ख़्याल है कि मुसलमानों का ज़्यादा अपमान न हो और उनका माल नाहक़ बर्बाद न हो।" आपके इस क़ौल से साबित होता है कि बेटा पैदा होने से मुसलमानों का कुछ अपमान हो गया है और आइंदा सिराज-ए-मुनीर के छपने से और भी ज़्यादा होगा। तो मैं कहता हूँ कि अगर भविष्यवाणियों का सच्चाई से ज़हूर में आ जाना मुसलमानों के अपमान का कारण है तो जिस क़दर यह अपमान हो उतना ही कम है।"

(मकतूबाते अहमद, भाग प्रथम, पृष्ठ 308-309 न्यू एडीशन 2008 ई. क़ादियान)

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपने विज्ञापन दिनांक 22 मार्च 1886 ई. में कुछ ऐतराज़ करने वालों का उत्तर देते हुए फ़रमाते हैं :

"एक नादान भी समझ सकता है कि मफ़हूम भविष्यवाणी का अगर एक साथ देखा जाए तो ऐसी ख़ुशखबरी ताक़तों से बाला तर है जिसके निशान-ए-इलाही होने में किसी को संदेह नहीं रह सकता और अगर संदेह हो तो ऐसी किस्म की भविष्यवाणी जो ऐसे ही निशान पर मुश्तमिल हो पेश करे। इस जगह आँखें खोल कर देख लेना चाहिए कि यह केवल भविष्यवाणी ही नहीं बल्कि एक अज़ीमुश्शान निशान आसमानी है जिसको ख़ुदाए करीम ने हमारे नबी करीम रऊफ़-ओ-रहीम मुस्तफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त-ओ-अज़मत ज़ाहिर करने के लिए ज़ाहिर फ़रमाया है और वास्तव मे यह निशान एक मुर्दा के ज़िंदा करने से सैंकड़ों दर्जा आला व अकमल और अफ़ज़ल है .. इस जगह अल्लाह तआला के एहसान और बरकत से हज़रत ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदावंद करीम ने इस आजिज़ की दुआ को क़बूल करके ऐसी बाबरकत रूह भेजने का वादा फ़रमाया जिसकी ज़ाहिरी और बातिनी बरकतें समस्त ज़मीन पर फैलेंगी।"

(मजमूआ विज्ञापन, भाग प्रथम, पृष्ठ 114-115)

बशीर-ए-अव्वल की वफ़ात और हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की हक्कानी तक़रीर

दिनांक 4 नवंबर 1888 ई. को साहिबज़ादा बशीर अव्वल ने बक़ज़ा ए इलाही वफ़ात पाई और मुख़ालेफ़ीन की तरफ़ से एक तूफ़ान बदतमीज़ी बरपा किया गया। इस मौक़ा पर हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने समस्त नुक्ता चीनियों का उत्तर देते हुए एक रसाला "हक़्क़ानी तक़रीर बर वाक़िया वफ़ात बशीर" प्रकाशित किया जो सब्ज़-रंग के काग़ज़ पर प्रकाशित होने की वजह से बाद में "सब्ज़ इश्तिहार" के नाम से ही मशहूर हो गया। इस विज्ञापन में हज़रत अकदस ने फ़रमाया :

"जिस क़दर इस आजिज़ की तरफ़ से विज्ञापन छपे हैं इन में से कोई शख़्स एक ऐसा हर्फ़ भी पेश नहीं कर सकता जिस में यह दावा किया गया हो कि मुस्लेह मौऊद और उम्र पाने वाला यही लड़का था जो फ़ौत हो गया है।" (सब्ज़ इश्तिहार, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 2, पृष्ठ 448)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

कि यदि हम इस विचार के आधार पर कि इल्हामी तौर पर स्वर्गवासी पुत्र की व्यक्तिगत महानताएं प्रकट हुईं हैं और उसका नाम मुबश्शर और बशीर और नूरुल्लाह सय्यिद तथा चिराग़ुद्दीन इत्यादि नाम व्यक्तिगत पूर्णता और प्रकाशमान स्वभाव के आधार पर रखे गए हैं, कोई विवरण सहित विस्तृत विज्ञापन भी प्रकाशित करते और उस में उन नामों के हवाले से अपनी यह राय लिखते कि शायद मुस्लिह मौऊद और उम्र पाने वाला यही लड़का होगा। तब भी विवेकी लोगों की दृष्टि में हमारा यह बयान विवेचना तक आपत्तिजनक न ठहरता।

(सब्ज़ इश्तिहार, रुहानी ख़ज़ाएन, भाग 2, पृष्ठ 450-451)

इसी सब्ज़ इश्तिहार में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की रहमत के दो महान तरीक़े वर्णन फ़रमाए हैं। हज़रत अकदस की यह तहरीर निहायत ही फ़ैसला करने वाली है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

ख़ुदा तआला की रहमत के उतरने और रूहानी बरकत के प्रदान करने के लिए बड़ी महान दो पद्धतियां है : (1) प्रथम यह कि कोई संकट और शोक-संताप उतार का सब्र करने वालों पर क्षमा और रहमत के दरवाज़े खोले जैसा कि उसने स्वयं फ़रमाया है -

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ (अलबक़रह - 156 से 158)

अर्थात् हमारा यही प्रकृति का नियम है कि हम मोमिनों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के संकट डाला करते थे और सब्र करने वालों पर हमारी रहमत उतरती है और सफलता के मार्ग उन्हीं पर खोले जाते हैं जो सब्र करते हैं।

(2) दूसरी पद्धति रहमत के उतरने की रसूलों और नबियों, इमामों, वलियों और खुलफ़ा का भेजा जाना है। ताकि उनकी पैरवी और हिदायत से लोग सद्मार्ग पर आ जाएं और स्वयं को उनके आदर्श पर बना कर मुक्ति पा जाएँ। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस ख़ाकसार की सन्तान के द्वारा ये दोनों भाग प्रकटन में आ जाएँ। अत: प्रथम उसने प्रथम प्रकार की रहमत उतारने के लिए बशीर को भेजा ताकि بَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ का सामान मोमिनों के लिए तैयार करके अपनी बाशरीयत का अर्थ पूरा करे ..

रहमत का दूसरा प्रकार जो अभी हमने वर्णन किया उसे पूर्ण करने के लिए ख़ुदा दूसरा बशीर भेजेगा जैसा कि बशीर प्रथम की मौत से पहले 10 जुलाई 1888ई के विज्ञापन में उसके बारे में भविष्यवाणी की गई है। और ख़ुदा तआला ने इस ख़ाकसार पर प्रकट किया कि एक दूसरा बशीर तुम्हें दिया जाएगा, जिसका नाम महमूद भी है। वह अपने कामों में दृढ़ प्रतिज्ञ होगा یخلق اللہ مایشآء

(सब्ज़ इश्तिहार, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 2, पृष्ठ 461 - 463 हाशिया)

यह सब्ज़ इश्तिहार भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद को समझने के लिए एक कुंजी है, उसी सब्ज़ इश्तिहार में अल्लाह तआला की दो किस्म की रहमतों का वर्णन कर के हुज़ूर अलैहिस्सलाम का यह फ़रमाना कि ख़ुदा तआला ने चाहा है कि इस आजिज़ की औलाद के ज़रीया से ये दोनों शक़ ज़हूर में आ जाएं स्पष्ट बताता है कि मुस्लेह मौऊद का वजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी जिस्मानी औलाद से ही आना था न कि आइन्दा किसी ज़माने में रुहानी औलाद के तौर पर, और आने वाले बशीर के विषय में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह भी फ़र्मा दिया कि वह मुर्सलीन-ओ-नबीईन-ओ-अइम्मा-ओ-औलिया और खुलफ़ा के मुक़ाम पर फ़ायज़ होगा। अब मुर्सलीन और नबीईन के मुक़ाम पर तो ख़ुद हज़रत अकदस थे लिहाज़ा इस मौऊद बेटे ने अइम्मा-ओ-औलिया खुलफ़ा के मुक़ाम पर होना था और इसी की पैरवी को हुज़ूर ने निजात पाना और राह-ए-रास्त पर आना है।

भविष्यवाणी का मिस्दाक़

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी तहरीरात में विभिन्न जगहों पर अपनी मुबश्शिर औलाद का वर्णन फ़रमाया है और हर बेटे या बेटी के विषय में उसकी जन्म से पूर्व उस की पैदाइश के विषय में किताब या विज्ञापन का हवाला दिया है लेकिन सब्ज़ इश्तिहार में जिस बेटे की पैदाइश की ख़बर का वर्णन है इस का मिस्दाक़ हमेशा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो को क़रार दिया है। इस के सबूत में नीचे लिखे हवाले पेश हैं :

हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी किताब "सिराज-ए-मुनीर" मैं अपनी सच्ची भविष्यवाणियों का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"पांचवीं भविष्यवाणी मैंने अपने लड़के महमूद की पैदाइश की निसबत की थी कि वह अब पैदा होगा और इस का नाम महमूद रखा जाएगा और इस भविष्यवाणी की इशाअत के लिए सबज़ वर्क़ के विज्ञापन प्रकाशित किए गए थे जो अब तक मौजूद हैं और हज़ारों आदमियों में तक़सीम हुए थे। इसलिए बे लड़का भविष्यवाणी की मीयाद में पैदा हुआ और अब नौवीं साल में है।" (सिराज-ए-मुनीर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 12 पृष्ठ 36)

किताब सिराज-ए-मुनीर की इसी तहरीर के हाशिया में हज़ूर मज़ीद फ़रमाते हैं "सब्ज़ इश्तिहार में सरीह लफ़्ज़ों में बिला तवक़्क़ुफ़ लड़का पैदा होने का वादा था, अत: महमूद पैदा हो गया। किस क़दर यह भविष्यवाणी अज़ीमुश्शान है अगर ख़ुदा का ख़ौफ़ है तो पाक-दिल के साथ सोचो!"

अपनी किताब "अंजाम आथम" मे हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"फिर एक और निशान यह है जो ये तीन लड़के जो मौजूद हैं, हर एक के पैदा होने से पहले उसके आने की ख़बर दी गई है इसलिए महमूद जो बड़ा लड़का है उसकी पैदाइश की निसबत इस सब्ज़ इश्तिहार में सरीह भविष्यवाणी महमूद के नाम साथ की मौजूद है जो पहले लड़के की वफ़ात के बारे में प्रकाशित किया गया था जो रिसाला की तरह कई वर्क़ का विज्ञापन सब्ज़-रंग के वर्क़ों पर है। और बशीर जो दरमयानी लड़का है उसकी ख़बर एक सफ़ैद विज्ञापन में मौजूद है जो सब्ज़ इश्तिहार के तीन साल बाद प्रकाशित किया गया था और शरीफ़ जो सबसे छोटा लड़का है इसके जन्म की निसबत भविष्यवाणी किताब 'ज़ियाउल-हक़' और 'अनवारुल इस्लाम' में मौजूद है।" (ज़मीमा अंजाम-ए-आथम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 11, पृष्ठ 299)

इसी तरह हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब "सिर्रुल खिलाफ़ा" में फ़रमाते हैं: **अनुवाद** और मैं तेरे सामने एक अजीब-ओ-ग़रीब क़िस्सा और हिकायत वर्णन करता हूँ कि मेरा एक छोटा बेटा था जिसका नाम बशीर था, अल्लाह तआला ने उसे बचपन में ही वफ़ात दे दी तब अल्लाह तआला ने मुझे इल्हाम मे बताया कि हम उसे अज़ राह एहसान तुम्हारे पास वापस भेज देंगे। ऐसा ही इस बच्चे की वालदा ने स्वप्न में देखा कि बशीर आ गया है और कहता है कि मैं आपसे निहायत मुहब्बत के साथ मिलूँगा और जल्द जुदा नहीं होंगा। इस इल्हाम और स्वप्न के बाद अल्लाह तआला ने मुझे दूसरा पुत्र अता फ़रमाया तब मैंने जान लिया कि येह वही बशीर है और ख़ुदा तआला अपनी ख़बर में सच्चा है इसलिए मैंने इस बच्चे का नाम बशीर ही रखा और मुझे उसके जिस्म में बशीर अव्वल का हुल्या दिखाई देता है। अत: अल्लाह तआला की सुन्नत रोया के ज़रीया साबित हो गई कि वे दो बंदों को एक ही नाम का शरीक बनाता है। (सिर्रुल खिलाफ़ा, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 8, पृष्ठ 381)

सब्ज़ इश्तिहार के हवाले से ही अपने बेटे हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब की पैदाइश का वर्णन करते हुए हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम अपनी किताब "तिरयाकुल-क़ुलूब" मे फ़रमाते हैं :

"मेरा पहला लड़का जो ज़िंदा मौजूद है जिसका नाम महमूद है अभी वह पैदा नहीं हुआ था जो मुझे कशफ़ी तौर पर उसके पैदा होने की ख़बर दी गई और मैंने मस्जिद की दीवार पर उसका नाम लिखा हुआ यह पाया कि महमूद। तब मैंने इस भविष्यवाणी के प्रकाशित करने के लिए सब्ज़-रंग के वर्क़ों पर एक विज्ञापन छापा जिसकी तारीख़ इशाअत यक्म दिसंबर1888 ई. है।" (तिरयाकुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15, पृष्ठ 214)

तिरयाकुल क़ुलूब में ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक और जगह फ़रमाया:

"महमूद जो मेरा बड़ा बेटा है इसके पैदा होने के बारे में विज्ञापन 10 जुलाई 1888 ई. में और तथा विज्ञापन 1 दिसंबर 1888 ई. में जो सब्ज़-रंग के काग़ज़ पर छापा गया था भविष्यवाणी की गई और सब्ज़-रंग के विज्ञापन में यह भी लिखा गया कि इस पैदा होने वाले लड़के का नाम महमूद रखा जाएगा और यह विज्ञापन महमूद के पैदा होने से पहले ही लाखों इन्सानों में प्रकाशित किया गया। इसलिए अब तक हमारे मुख़ालिफ़ों के घरों में सदहा ये सब्ज़-रंग के विज्ञापन पड़े हुए होंगे और ऐसा ही दहम जुलाई 1888 ई. के विज्ञापन भी हर एक के घर में मौजूद होंगे। फिर जब कि इस भविष्यवाणी की शौहरत बज़रीया विज्ञापन कामिल दर्जा पर पहुंच चुकी और मुसलमानों और ईसाइयों और हिंदूओं में से कोई भी फ़िर्क़ा बाक़ी न रहा जो इस से बे-ख़बर हो तब ख़ुदा

तआला के फ़ज़ल और रहम से 12, जनवरी 1889 ई. को मुताबिक़ 9 जमादीऊल अव्वल 1306 हमें बरोज़ शंबा महमूद पैदा हुआ।"

(तिरयाकुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15, पृष्ठ 219)

अपनी तसनीफ़ लतीफ़ हकीकतुल वह्यी में भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने सब्ज़ इश्तिहार के मिस्दाक़ को वर्णन फ़रमाया है, हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"ऐसा ही जब मेरा पहला लड़का फ़ौत हो गया तो नादान मौलवियों और उन के दोस्तों और ईसाइयों और हिंदूओं ने उसके मरने पर बहुत ख़ुशी ज़ाहिर की और बार-बार उन को कहा गया कि20 फ़रवरी 1886 ई. में यह भी एक भविष्यवाणी है कि कुछ लड़के फ़ौत भी होंगे। अत: ज़रूर था कि कोई लड़का ख़ुर्द-साली में फ़ौत हो जाता तब भी वे लोग एतराज़ से बाज़ नहीं आए तब ख़ुदा तआला ने एक दूसरे लड़के की मुझे बशारत दी इसलिए मेरे सब्ज़ इश्तिहार के सातवें पृष्ठ में इस दूसरे लड़के के पैदा होने के बारे में यह बशारत है दूसरा बशीर दिया जाएगा जिसका दूसरा नाम महमूद है वह जबकि अब तक जो यक्म सितंबर 1888 ई. है पैदा नहीं हुआ मगर ख़ुदा तआला के वादा के मुवाफ़िक़ अपनी मीयाद के अंदर ज़रूर पैदा होगा ज़मीन आसमान टल सकते हैं पर उस के वादों का टलना मुम्किन नहीं। यह है इबारत विज्ञापन सबज़ के पृष्ठ सात की जिसके मुताबिक़ जनवरी 1889 ई. में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम महमूद रखा गया और अब तक अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ज़िंदा मौजूद है और सत्रहवीं साल में है।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 373- 374)

किताब हकीकतुल वह्यी में ही हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने चौंतीसवें (34) निशान में सब्ज़ इश्तिहार का हवाला देकर हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब की पैदाइश का वर्णन यूं फ़रमाया है :

"मैंने एक सब्ज़-रंग के विज्ञापन में हज़ारों मुवाफ़िक़ों और मुख़ालिफ़ों में यह भविष्यवाणी प्रकाशित की और अभी सत्तर दिन पहले लड़के की मौत पर नहीं गुज़रे थे कि यह लड़का पैदा हो गया और इस का नाम महमूद अहमद रखा गया।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 227)

शुरू में यह वर्णन किया जा चुका है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सब्ज़ इश्तिहार में अल्लाह तआला की दो किस्म की रहमतों का वर्णन फ़रमाया है, किसम अव्वल का मिस्दाक़ बशीर अव्वल मरहूम को क़रार दिया और रहमत इलाही की दूसरी किस्म (यानी) इरसाल मुर्सलीन और नबियों और अइम्मा और औलिया और खुल्फ़ा) के लिए दूसरे बशीर दिए जाने का ऐलान फ़रमाया जिसका दूसरा नाम महमूद बताया। और यह बात भी वाज़ह है कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपने एक ही बेटे का नाम बशीर और महमूद रखा और किसी बेटे का नाम महमूद नहीं रखा। अत: सब्ज़ इश्तिहार में इसी बशीर और महमूद को हज़ूर ने उलुलअज़म क़रार दिया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसी मौऊद बेटे के विषय में कुछ और जगहों पर भी इसका

वर्णन फ़रमाया है मसलन हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी किताब "आईना कमालात इस्लाम" में इसी मुस्लेह मौऊद वाली भविष्यवाणी का वर्णन कर के नीचे हाशिए में तहरीर फ़रमाते हैं :

अनुवाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम यह ख़बर दे चुके हैं कि जब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आएगा तो वह शादी करेगा और इस के हाँ औलाद भी होगी। इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि अल्लाह तआला उस (मौऊद) को एक ऐसा सालेह बेटा देगा जो अपने बाप के मुशाबेह होगा और अपने बाप के ख़िलाफ़ नहीं करेगा और वह अल्लाह तआला के मुअज़्ज़िज़ बंदों में से होगा। और इस में राज़ यह है कि अल्लाह तआला अंबिया और औलिया को जब भी औलाद या नसल की खुशखबरी देता है तो सिर्फ तभी देता है जब उस ख़ुदा ने नेक औलाद देना मुक़द्दर कर लिया होता है। और यह (मौऊद) बेटे की बशारत वह है जिसकी ख़ुशख़बरी मुझे कई साल पहले दे दी गई थी और अपने दावा (मसीह-ओ-महदी) से भी पहले।

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 5 पृष्ठ 578

फिर हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी किताब "एजाजुल -मसीह" मे फ़रमाते हैं :

अनुवाद : और जब हम (मुराद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम- लेखक) इस दुनिया से रुख़स्त हो जाऐंगे तो फिर हमारे बाद क़यामत तक कोई और मसीह नहीं आएगा और न ही कोई आसमान से उतरेगा और न ही कोई ग़ार से निकलेगा सिवाए उस मौऊद लड़के के जिसके बारे में पहले से मेरे रब के कलाम में वर्णन आ गया है।

(एजाजुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग18, पृष्ठ 73)

और इसके हाशिया में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फिर فَيَتَزَوَّجُ وَيُوْلَدُ لَه वाली हदीस का हवाला दिया है :

हुज़ूर अलैहिस्सलाम का अपने मौऊद बेटे वाली भविष्यवाणी को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस فَيَتَزَوَّجُ وَيُوْلَدُ لَه से जोड़ना साबित करता है कि यह बेटा जस्मानी औलाद में से होना मुक़द्दर था कि अगर आइन्दा किसी ज़माने में रुहानी तौर पर किसी और बेटे का वर्णन होता तो फिर उस भविष्यवाणी को इस हदीस से जोड़ने की ज़रूरत नहीं थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि मैं तेरी जमाअत के लिए तेरी ही नस्ल से एक शख़्स को क़ायम करूँगा और उसको अपने क़ुरब और वह्यी से मख़सूस करूँगा और उसके ज़रीया से हक़ तरक़्क़ी करेगा और बहुत से लोग सच्चाई को क़बूल करेंगे अत: उन दिनों के मुंतज़िर रहो और तुम्हें याद रहे कि हर एक की शनाख़्त उसके वक़्त में होती है और क़बल अज़ वक़्त मुम्किन है कि वह मामूली इन्सान दिखाई दे या कुछ धोखा देने वाले ख़्यालात की वजह से एतराज़ के योग्य ठहरे जैसा कि क़बल अज़ वक़्त एक कामिल इन्सान बनने वाला भी पेट में सिर्फ एक नुतफ़ा (वीर्य) या अलका (लोथड़ा) होता है।"

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 306 हाशिया)

जैसा कि सब्ज़ इश्तिहार में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस बशीर सानी और महमूद को "मुर्सलीनऔर नबी और अइम्मा और औलिया और खलिफ़ा" की रहमत का वारिस क़रार दिया था ऐसा ही रिसाला अल् वसीयत में इस बात का वर्णन कर के कि "मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी

क़ुदरत का मज़हर होंगे क़ुदरत सानिया के मज़हर उन वजूदों में अपने इस मौऊद बेटे को भी शामिल फ़रमाया इसलिए इन्ही भविष्यवाणियों के मुताबिक़ क़ुदरत-ए-सानिया के मज़हर अव्वल हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहिब भैरवी रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की नस्ल से इस मौऊद बेटे अर्थात बशीर सानी को ही क़ुदरत सानिया के मज़हर सानी के तौर पर मुंतख़ब फ़रमाया। और जैसा कि हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था "हर एक की शनाख़्त उसके वक़्त में होती है" इसलिए आने वाले वक़्त ने साबित कर दिया कि वही मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ही मुस्लेह मौऊद है और जो जो अलामतें भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद में अल्लाह तआला ने वर्णन फ़रमाई थीं वे एक एक करके सबकी सब हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़ात में पूरी हुईं

1906 ई. में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो एक घर के विषय में लाहौर तशरीफ़ ले गए, इस मौक़ा पर मुंशी महबूब आलम ऐडीटर अख़बार "पैसा" ने साहिबज़ादा साहिब की लाहौर आमद के विषय में ख़बर देते हुए तंज़िया अंदाज़ में लिखा : "बड़ा लड़का बावजूद एक साहिब औलाद है परंतु मालूम हुआ है कि मिडल फ़ेल हो चुका है अगर मिर्ज़ा जी के बाद यही लड़के उनके गद्दी के वारिस बने तो ख़ूब मज़हब चलाएंगे।" (बहवाला अख़बार अलहकम 17 जुलाई 1906 ई. पृष्ठ 2 कालम 4)

पैसा अख़बार के लेखक का जवाब उसी वक़्त ऐडीटर अख़बार अलहकम हज़रत शैख़ याक़ूब अली इर्फ़ानी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने अख़बार में दे दिया था। लेकिन एक जवाब अल्लाह तआला की तरफ़ से दिया जाना अभी बाकी था। अल्लाह तआला ने इसी लड़के को जिसके विषय में यह कहा गया था कि "अगर मिर्ज़ा जी के बाद यही लड़के उनके गद्दी का वारिस बने तो ख़ूब मज़हब चलाएगा, जमाअत अहमदिया का दूसरा ख़लीफ़ा बना के दुनिया को दिखा दिया कि इसी के द्वारा अहमदियत का पैग़ाम दुनिया के कोने कोने तक पहुंचा। इसी के वजूद से क़ौमों ने बरकत पाई। इसी के वजूद से दीन इस्लाम का शरफ़ और कलामुल्लाह का मर्तबा लोगों पर ज़ाहिर हुआ। उसी के मसीही नफ़स और रूहुल-क़ुदुस की बरकत से बहुतों ने बीमारियों से नजात पाई। इसी की सख़्त ज़हानत-ओ-फ़हम से एक आलम ने फ़ायदा उठाया और बहुत से असीरों की रस्तगारी का मूजिब हुआ। वह लड़का शत्रुओं और द्वेष रखने वालों के विरोध, उनकी बददुआओं, अपशब्दों, उपद्रवों के बावजूद जल्द जल्द बढ़ा और ज़मीन के किनारों तक शौहरत पा गया। हज़रत-ए-अक़दस अलैहिस्सलाम की यह बात कितनी सफ़ाई से पूरी हुई:

"मैं जानता हूँ कि जिन बातों के प्रकाशित करने के लिए मैं मामूर हूँ हर-चंद यह बदज़नी से भरा हुआ ज़माना उनको कैसे ही अपमान की निगाह से देखे लेकिन आने वाला ज़माना इस से बहुत सा फ़ायदा उठाएगा।"

(मकतूबाते-ए-अहमद, भाग प्रथम, पृष्ठ 305 न्यू ऐडीशन)

हे ख़ुदा के बर्गुज़ीदा मसीह और महदी तुझ पर हज़ारों रहमतें और हज़ारों सलाम कि हम ने तेरी बताई हुई अलामात के मुताबिक़ इस मुस्लेह मौऊद को पहचाना और उस की ज़ात बाबरकात से फ़ायदा उठाया और नजात और फ़लाह की राहों पर सूचना पाई।

★ ★ ★

मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की
मृत्यु और जीवन की आस्था का महत्व

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अर्थात् हज़रत मसीह नासिरी की मृत्यु और जीवन की आस्था का तीन प्रकार से विशेष महत्व है **प्रथम-** इस दृष्टि से कि इस समय संसार का अधिकांश भाग ईसाई धर्म का अनुयायी होने के कारण हज़रत मसीह नासिरी को ख़ुदा का बेटा समझते हुए इस बात पर विश्वास रखता है कि वह इस संसार में कुछ वर्ष जीवन व्यतीत करने के पश्चात् आसमान पर वापस चले गए और वहां जीवित मौजूद हैं और ('हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं') ख़ुदा के अनादि शासन के भागीदार हैं। **द्वितीय-** इस दृष्टि से कि ईसाइयों की इस आस्था से आन्तरिक तौर पर प्रभावित हो कर तथा कुछ क़ुर्आन की आयतों और हदीसों की ग़लत व्याख्या करके इस युग की मुसलमान जनता भी इस धारणा पर दृढ़ हो गई है कि यद्यपि हज़रत ईसा ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा तो नहीं थे अपितु केवल ख़ुदा के एक नबी थे, परन्तु सलीब की घटना पर ख़ुदा ने उन्हें इस भौतिक शरीर के साथ आसमान पर उठा लिया था और वह अब तक आसमान पर जीवित मौजूद हैं और अन्तिम युग में पुन: धरती पर उतर कर उम्मते मुहम्मदिया का सुधार करेंगे। **तृतीय** - इस दृष्टि से कि चूंकि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब प्रवर्तक सिलसिला अहमदिया का मसीह मौऊद होने का दावा है, इसलिए जब तक हज़रत मसीह नासिरी की मृत्यु और जीवन की आस्था का निर्णय न हो कोई मुसलमान हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मसीहियत के दावे की ओर गंभीरतापूर्वक ध्यान नहीं दे सकता। इन तीन कारणों से आवश्यक है कि क़ुर्आन, हदीस और ईश्वरप्रदत्त बुद्धि की दृष्टि से इस समस्या का समाधान करके ख़ुदा की प्रजा के मार्ग-दर्शन का सामान उपलब्ध किया जाए और ईसाइयत के मुकबले में इस्लाम की प्रतिष्ठा में उन्नति हो।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब का दा'वा और मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी प्रवर्तक जमाअत अहमदिया के मसीह होने के दावे के मार्ग में सब से प्रथम प्रश्न हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु का है, क्योंकि जब तक यह सिद्ध न हो जाए कि पूर्व मसीह की मृत्यु हो चुकी उस समय तक चाहे हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावे की सच्चाई पर सहस्त्रों सूर्यों को चढ़ा दिया जाए स्वभाव में कुछ आशंका अवश्य रहती है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब का जिस पद का दावा है अर्थात मसीह होने का जब तक उस की कुर्सी खाली न हो हज़रत मिर्ज़ा साहिब की सच्चाई के बारे में हृदय को सन्तुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती। अत: आवश्यक है कि सर्व प्रथम इस बाधा को दूर किया जाए। अत: स्पष्ट हो कि क़ुर्आन करीम और हदीसों से ज्ञात होता है कि अन्तिम युग में जबकि मुसलमान दयनीय स्थिति में होंगे और

मसीही आस्थाओं का ज़ोर होगा तथा अधर्म हर ओर अपना दामन फैला रहा होगा परमेश्वर मुसलमानों में एक मसीह अवतरित करेगा जो न केवल मुसलमानों में सुधार कार्य करेगा अपितु अन्य धर्मों के मुकाबले में भी खड़ा होगा और ठोस तर्कों द्वारा इस्लाम की विजय अन्य समस्त धर्मों पर सिद्ध कर देगा यहां तक तो सभी मुसलमानों की सर्वमान्य आस्था है परन्तु इस से आगे मतभेद आरंभ हो जाता है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब के विरोधी विद्वानों की यह मान्यता है कि कथित मसीह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही हैं जो सलीबी घटना के अवसर पर आसमान की ओर उठा लिए गए थे और अब तक भौतिक शरीर के साथ आसमान पर जीवित मौजूद हैं और अन्तिम युग में दोबारा पृथ्वी पर उतरेंगे। इस के मुक़ाबले पर हज़रत मिर्ज़ा साहिब और आप की जमाअत की यह शिक्षा है कि हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है। इसलिए आने वाला मसीह कोई अन्य व्यक्ति होना चाहिए जो हज़रत मसीह नासिरी का सदृश बन कर आएगा। यद्यपि कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब का कर्तव्य न था कि वह मसीह की मृत्यु सिद्ध करते अपितु मिर्ज़ा साहिब के विरोधियों का कर्तव्य है कि वे क़ुर्आन और सही हदीसों से हज़रत मसीह का जीवित होना सिद्ध करें, क्योंकि मसीह के जीवित रहने का दावा एक ऐसा दावा है जो सामान्य अवलोकन के विपरीत होने के कारण किसी स्पष्ट सबूत के अभाव में मृत्यु के दावे के मुकाबले में नहीं किया जा सकता, जिसके लिए किसी बाह्य सबूत की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह सामान्य स्वाभाविक नियम के अनुकूल है, परन्तु बावजूद इसके हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने जनता के सुधार की नीयत से इस कार्य को अपने दायित्व में लिया फिर सुचारु रूप से उसका निर्वाह किया। आज और तो और बड़े-बड़े ग़ैर अहमदी प्रकाण्ड विद्वान भी इस विवाद पर किसी अहमदी के साथ वार्तालाप करते हुए बहुत घबराते हैं अपितु कई बार तो बात करने से ही बिल्कुल इन्कार कर देते हैं तथा कहते हैं कि इस विवाद का हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दावे के साथ क्या संबंध है, जबकि मोटी बुद्धि वाला मनुष्य भी इस बात को समझ सकता है कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब के बारे में जांच-पड़ताल के मार्ग में मसीह नासिरी की मृत्यु और जीवन का मामला प्रथम प्रश्न है जिसका समाधान होना चाहिए।

प्रथम अध्याय
(आसमान पर उठाए जाने का)

इस संक्षिप्त भूमिका के पश्चात् कुछ सरल और साधारण तौर पर समझ में आने वाली बातों का वर्णन करना चाहता हूँ जिनसे स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि हज़रत मसीह नासिरी भौतिक शरीर के साथ आसमान पर कदापि नहीं उठाए गए अपितु उन्होंने पृथ्वी पर ही अपने जीवन के दिन बिताए और पृथ्वी पर ही उनकी मृत्यु हुई।

मनुष्य का जीवन-मृत्यु इसी संसार से सम्बद्ध है

अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में प्रजा को सम्बोधित करते हुए फ़रमाता है -

فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ (सूरह:आराफ़ रुकू 2)

अर्थात् "तुम अपने जीवन के दिन पृथ्वी पर ही व्यतीत करोगे और पृथ्वी पर ही तुम्हें मृत्यु आएगी।"

इस आयत में परमेश्वर स्पष्टता के साथ वर्णन करता है कि समस्त मनुष्यों के लिए यह प्रारब्ध हो चुका है कि वे पृथ्वी पर ही जीवन के दिन गुज़ारेंगे तदोपरांत जब मृत्यु का समय आएगा तो उनकी मृत्यु भी पृथ्वी पर ही होगी। स्पष्ट है कि संसार में मनुष्य पर दो ही समय आते हैं। एक जीवन का समय है और एक मृत्यु का समय। इन दोनों को अल्लाह तआला ने पृथ्वी के साथ विशेष कर दिया है। अब प्रश्न उठता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बावजूद एक मनुष्य होने के किस प्रकार पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जा बैठे? क्या मसीह को जीवित आकाश पर ले जाते हुए अल्लाह तआला अपने इस निर्णय को भूल गया कि मनुष्य अपने जीवन के दिन धरती पर ही व्यतीत करेगा और धरती पर ही मृत्यु को प्राप्त होगा? फिर अल्लाह तआला फ़रमाता है -

اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ كِفَاتًا اَحۡيَآءً وَّاَمۡوَاتًا (सूरह: मुरसलात रुकू 1)

अर्थात् "हमने इस धरती को ऐसा बनाया है कि वह मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करने वाली और अपने पास रोकने वाली है। चाहे मनुष्य जीवित अवस्था में हो या मृत अवस्था में हो।"

इस आयत ने मानो पहली आयत की व्याख्या कर दी। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हम ने पृथ्वी के अन्दर यह विशेषता रखी है कि वह जीवित और मृत दोनों को अपने साथ लगाए रखती है। और मानव शरीर को अपने से बाहर नहीं जाने देती। ये आयत भी मसीह के आकाश पर जाने को अनुचित सिद्ध कर रही है।

नबी करीम (स.अ.व.) अपने मनुष्य होने को पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर जाने के मार्ग में बाधक बताते हैं

तत्पश्चात जब काफ़िरों ने नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से कहा कि यदि आप सच्चे हैं तो हमें आसमान पर चढ़ कर दिखाएँ। फिर हम मान लेंगे। इसके उत्तर में अल्लाह तआला ने आप को आदेश दिया कि हे रसूल तू इनको उत्तर दे कि

سُبۡحَانَ رَبِّیۡ هَلۡ كُنۡتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوۡلًا (बनी इस्राईल रूकू-10)

अर्थात् पाक है मेरा रब मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूँ।

इस आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट बताया है कि एक मनुष्य का जीवित आकाश पर जाना ख़ुदा के नियम और वादे के विपरीत है और ख़ुदा इस बात से पवित्र है कि ख़ुदा अपने निर्णयों को खंडित करे। विचारणीय है कि अरब के काफ़िर नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) जैसे महान् वैभवशाली मनुष्य से आकाश पर जाने के चमत्कार की माँग करते हैं और इस प्रकार का चमत्कार देखने पर ईमान लाने का वादा करते हैं परन्तु नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) स्पष्ट उत्तर देते हैं कि मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूँ और कोई मनुष्य आकाश पर जीवित नहीं जा सकता।

इस आयत की उपस्थिति में एक ईसाई यह बात कहने का साहस करता है तो करे कि मसीह जीवित आकाश पर चला गया परन्तु एक मुसलमान कहलाने वाला मनुष्य जो मसीह को एक मनुष्य और नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से श्रेणी में बहुत छोटा मनुष्य समझता है वह एक पल के लिए भी इस बात को स्वीकार नहीं कर सकता कि मसीह नासिरी अपने पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जा बैठे हों। कितनी विचित्र बात है कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तो काफ़िरों को यह उत्तर देते हैं कि मैं केवल एक मनुष्य हूँ और मनुष्य का आकाश पर जीवित चले जाना ख़ुदा के नियम और निर्णय के विरुद्ध है परन्तु मुसलमान हैं कि मसीह को मनुष्य मानते हुए फिर भी उस को आकाश पर बैठा रहे हैं। क्या यदि वास्तव में मसीह आकाश पर जीवित बैठा है तो वह इस आयत के अनुसार मनुष्य से श्रेष्ठ हस्ती सिद्ध नहीं होता? क्या एक ईसाई मुसलमान को यह नहीं कह सकता कि जब क़ुर्आन में तुम्हारे नबी आकाश पर जीवित जाने के मार्ग में केवल अपने मानव होने को बतौर रोक के वर्णन करते हैं तो क्या मसीह जो तुम्हारे निकट आकाश पर जीवित पार्थिव शरीर के साथ जा पहुँचा वह तुम्हारे नबी से श्रेष्ठ अपितु मनुष्य से उच्च हस्ती सिद्ध न हुआ? इसका उत्तर मुसलमानों के पास केवल लज्जित होने के और क्या है। खेद! मुसलमानों ने स्वयं अपने हाथों से इस्लाम में इस्लाम को छोडऩे का मार्ग खोला और अपने सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स.अ.व.) की सर्वोच्चता पर स्वयं अपने हाथ से प्रहार किया। किसी ने सच कहा है -

من ازبیگا نگاں ہر گز نہ نالم کہ بامن ہر چہ کرد آں آشنا کرد

अर्थात "मैं दूसरों का गिला नहीं करता मुझ से तो जो कुछ किया है मेरे अपने मित्रों ने ही किया है।

(शेष.....)

(किताब हुज्जतुल बालिग़ा पृष्ठ 1-7)

☆ ☆ ☆

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

HO & FACTORY:20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

इस्लाम के लिए सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाह की सेवाएं

लेखक : शैख मुहम्मद ज़करिया

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फरमाता है :

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ ۙ وَلَوۡ کَرِهَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ۔

अर्थात वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के प्रत्येक क्षेत्र) पर पूर्ण रूप से विजयी कर दे चाहे मुश्रिक बुरा मनाएँ। (अस-सफ़्फ़ : 10)

प्रिय पाठकों, इसकी व्याख्या करते हुए टिप्पणीकार और पुराने नेक लोग कहते हैं, "यह महदी के आगमन के दौरान है" هٰذَا عِنۡدَ خُرُوۡجِ الۡمَهۡدِیِّ (इब्न जरीर), "और وَذٰلِكَ عِنۡدَ نُزُوۡلِ عِیۡسَی اِبۡنِ مَرۡیَمَ" (तफ़सीर जामिउल बयान) यानी यह प्रभुत्व ईसा मसीह और महदी के प्रकट होने के समय में होगा।

इसलिए इस महान उद्देश्य के लिए अल्लाह सर्वशक्तिमान ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आध्यात्मिक पुत्र हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी को मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम के रूप में नियुक्त करके इस्लाम धर्म की नींव को फिर से स्थापित किया। और साथ ही अपने वादे और रसूल मकबूल सल्लाल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आप को इस महान मिशन की सेवाओं को जारी रखने के लिए एक पिसरे मौऊद (वादा किए गए बेटे) की खुशखबरी भी दी। अत: निर्धारित समय पर अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब के रूप में मुस्लेह मौऊद प्रदान किया।

धर्म की सेवा करने का जुनून

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर आप हुज़ूर के सिरहाने पर खड़े हो कर इस्लाम की सेवा करने के लिए बड़े जोश से वचन लिया और फिर आप ने इस वचन को बहुत ही खूबसूरती से निभाया। आप स्वयं फरमाते हैं: इस्लाम की जो भी सेवा हो वह मेरे हाथ से हो।

वो बोझ उठा न सके जिसको आसमान-ओ-ज़मीं
उसे उठाने को आया हूँ क्या अजीब हूँ मैं

आलम-ए-इस्लाम के लिए दुआ

हज़रत मुस्लेह मौऊद भी बचपन से ही इस सुन्नत-ए-नब्वी को आशिक़ाना जज़्बे से अपनाने की कोशिश करते थे। और जवानी की उम्र को पहुंचने से भी पहले घंटों तहज्जुद अदा करते थे। तीन-तीन चार-चार घंटे तक और क्रीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस सुन्नत को अधिकतर दृष्टिगत रखते थे कि आपके पांव खड़े खड़े सूज जाते थे। (पत्र हज़रत मुस्लेह मौऊद बनाम साहिबज़ादा मुबारक अहमद साहिब/ बहवाला: यादों के दरीचे)

इसी पत्र में आप ने लिखा है ऐन जवानी के उम्र में अरब के दिलनशीन, दिलरुबा दृश्यों से आनंदित होना आपने गवारा नहीं फ़रमाया बल्कि इस पर यार-ए-महबूब की ज़यारत को प्राथमिकता देकर हज करके

आए। जवानी के इबतिदाई ज़माने में ही आपको कुछ दिन उदास पाकर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वजह पूछी। इस पर आपने बुख़ारी शरीफ़ की इच्छा ज़ाहिर की और फिर आप बिलकुल ऐन जवानी में बुख़ारी की सारी जिल्दों में इस क़दर डूबे रहे कि आपने सिर्फ और सिर्फ बुख़ारी की मदद से ख़िलाफ़त से पहले ही सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अख़बार अलफ़ज़ल में क़िस्त वार लेख लिखते रहे जो कि बाद में पुस्तकीय रूप में भी प्रकाशित हुए। इस पुस्तक में 266 पृष्ठ हैं।

मुझे इस बात पर है फ़ख़र महमूद
मेरा माशूक़ महबूब-ए-ख़ुदा है
मुहम्मद मेरे तन में मिस्ल-ए-जां है
ये है मशहूर जां है तो जहां है

यानी बचपन से ही आशिक़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मुस्लेह मौऊद को आलम-ए-इस्लाम की ख़िदमात और इस के रोशन भविष्य के दीदार की एक दिली तमन्ना थी और क़दम क़दम पर इलाही रहनुमाई भी आपको मिलती रही। चुनांचे आप ने आलम-ए-इस्लाम की ख़िदमात चाहे वो दिफ़ाई (रक्षात्मक) हो या तामीरी (रचनात्मक) प्रत्येक रूप से एक प्रशंसनीय अमिट उदाहरण स्थापित किया।

इस्लाम जगत के विकास और कल्याण के लिए अपनी हार्दिक इच्छा व्यक्त करते हुए आप फ़रमाते हैं: "जब सउदी, इराकी, सीरियाई और लेबनानी, तुर्क, मिस्र और यमनवासी सो रहे होते हैं तो मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा होता हूँ और मुझे यकीन है कि वे दुआएं अवश्य स्वीकार होंगी। (रिपोर्ट मज्लिस मुशावरत)

और इस के लिए दिन रात दुआओं और योजनाओं के साथ-साथ उनको अमली जामा भी पहनाते रहे।

इस्लामी एकता के 31 सूत्र

आलम-ए-इस्लाम की रहनुमाई करते हुए 1927 में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक विस्तृत ट्रैक्ट भी प्रकाशित किया। जिसका शीर्षक था "इस्लाम और मुसलमानों के लिए आप क्या कर सकते हैं?" इसमें आपने मुसलमानों के कल्याण के लिए 31 बिंदुओं की एक विस्तृत योजना प्रस्तुत की। इस में विशेष रूप से मुसलमानों को बेरोज़गारी और शिक्षा और सरकारी नौकरियों में भर्ती की ओर ध्यान दिलाया है।

(बहवाला अनवारुल उलूम जिल्द 9 स 532 ता 537)

जलसा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

एक गुस्ताख़-ए-रसूल तेजपाल की किताब रंगीला रसूल ने भारत का माहौल खराब कर दिया था और इसी बीच एक मुस्लिम युवक ने दिनदहाड़े उनकी हत्या कर दी। और तो और हर तरफ अफरा-तफरी मच गई। इस मौक़ा पर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने मुसलमानों की रहनुमाई फ़रमाते हुए देश के चप्पे-चप्पे पर सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जलसे आयोजित करने और इस के लिए 1000 वक्ताओं को तैयार करने और साथ ही ग़ैर मुस्लिम विद्वानों से हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुताल्लिक़ तक़रीर करवाने और उन्हें पुरस्कार देने का प्रस्ताव रखा।

अत: इसी आधार पर सीरतुन्नबी के जलसों की नींव रखी गई और अब इस जलसे का हिंद और

पाक उपमहाद्वीप के धार्मिक इतिहास, विशेषकर और सामान्य रूप से दुनिया पर गहरा प्रभाव पड़ा है और यह अब एक वैश्विक आयोजन का रूप ले रहा है।

ख़िलाफ़त मूवमेंट

प्रथम विश्व युद्ध में तुर्कों ने जर्मनों के साथ मिलकर मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ने का निर्णय लिया। इस युद्ध में जर्मन हार गए, मित्र राष्ट्र जीत गए, फिर तुर्की के तथाकथित खलीफा सुल्तान अब्दुल हमीद को अपदस्थ कर दिया गया। अत: तुर्क मुस्तफ़ा कमाल पाशा सत्ता में आ गए। और उसने नाम मात्र की खिलाफ़त को भी समाप्त कर दिया। इस पर हिंदुस्तान में मुसलमानों ने खिलाफ़त को जारी रखने का आंदोलन चला दिया कि अंग्रेज़ों ने एक मुसलमान खिलाफ़त का समापन किया है इसलिए मुसलमानों को विशेष रूप से हिंदुस्तान के मुसलमानों को अंग्रेज़ों के विरुद्ध जिहाद करना चाहिए।

इस के लिए हिन्दूस्तान के मुसलमानों को तुर्क से असहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। यह आंदोलन वास्तव में उस समय के राजनीतिक दिमाग का आविष्कार था और वो जिन मुल्लाओं को नवाज़ा हुआ था उनके ज़रीया ये तहरीक चलाई गई और फिर ये इतनी शिद्दत पकड़ गई कि सभी बड़े विद्वान और सभी मुस्लिम राजनीतिक नेता इसमें फंस गए। और विद्वानों ने पवित्र कुरान की आयतों का गलत अनुमान लगाकर फतवा दिया कि अब मुसलमानों के लिए केवल एक ही रास्ता बचा है और वह है कि अंग्रेज़ो के साथ रहना पूरी तरह से छोड़ दें और अपनी मातृभूमि छोड़ दें और किसी इस्लामी देश में मुसलमान बन जाएं। फिर वहां से हमला करें और बड़ी शान के साथ वापस आएं और अंग्रेजों को हराकर उन्हें भारत से बाहर निकाल दें। इस महत्वपूर्ण मोड़ पर हज़रत मुस्लेह मौऊद की ही आवाज़ थी जो इस तहरीक के ख़िलाफ़ उठी और जिसने मुसलमानों की आँखें खोलने की कोशिश की और बड़ी स्पष्टता के साथ बार-बार हालात को जांच परख कर बताया कि ख़िलाफ़त मूवमेंट और सरकार से असहयोग और तुर्क असहयोग आंदोलन हर दृष्टि से ग़लत है। और उसके लिए कुरान की आयतों का गलत रूप से उपयोग न करें। इस तरह यह इस्लाम का अपमान है और इस्लाम के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि का घोर अपमान है।

आख़िर में हज़रत अक़दस अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दुआइया कलिमात पर अपने मज़मून को ख़त्म करता हूँ। आप फरमाते हैं :

'' हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की ख़िलाफ़त के वक़्त में जबकि आप की उम्र सिर्फ 20 साल थी, उस वक़्त भी आप के दिल में दीन के लिए और क़ौम के लिए एक दर्द था। अल्लाह तआला हज़ारों हज़ार रहमतें नाज़िल फ़रमाए आपकी रूह पर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन को फैलाने और आपके सच्चे ग़ुलाम और मसीह मौऊद और महदी माहूद के मक़सद को पूरा करने के लिए रात-दिन एक कर के और अपने अह्द को पूरा कर के अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हुए और हमें आपकी इस दर्द-भरी दुआ को समझने और करने और अहमदी होने के मक़सद को पूरा करने की अल्लाह तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।'' आमीन। (अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 15 ता 21 मार्च 2019 पृष्ठ 5 ता 9)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ○ (النحل 12)

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FFT Fruits

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile
09937238938

محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON

snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm

Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com

We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture

Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إن ربك يبسط الرزق لمن يشاء ويقدر ۔ إنه كان بعباده خبيرا بصيرا ○

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

हाई ब्लड प्रेशर से बचें

आपका हृदय धमनियों के माध्यम से खून को शरीर में भेजता है। शरीर की धमनियों में बहने वाले रक्त के लिए एक निश्चित दबाव जरूरी होता है। जब किसी वजह से यह दबाव अधिक बढ़ जाता है, तब धमनियों पर ज्यादा असर पड़ता है। दबाव बढ़ने के कारण धमनियों में रक्त का प्रवाह बनाए रखने के लिये दिल को सामान्य से अधिक काम करना पड़ता है। इस स्थिति को उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) कहते हैं।

उपाय: प्रतिदिन 20-25 मिनट तक व्यायाम करें।

-स्वस्थ आहार जैसे साबुत अनाज, फल, सब्जियां, डेरी प्रोडक्ट्स एवं कम फैट वाले भोजन से बी.पी. कम हो जाता है। -बिना मलाई वाले दूध का सेवन करें।

-दूध, हरी सब्जियां, दाल, सोयाबीन, प्याज, लहसुन और संतरें में ये पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में होते हैं। -प्रतिदिन मेवे में 4 अखरोट एवं 5 से 7 बादाम खाएं।

-उच्च रक्तचाप में फलों में सेब, अमरूद, अनार, केला, अंगूर, अनानास, मौसंबी, पपीता।

-हर रोज सुबह खाली पेट लहसुन की 2 कलियां खाएं।

-खट्टे फल, नींबू पानी, सूप, नारियल पानी, सोया, अलसी और काले चने खाएं।

-रोजाना पानी अधिक मात्रा में पीये। -भोजन के लिए सोयाबीन तेल इस्तेमाल करना चाहिए।

-सलाद में प्याज, टमाटर, मूली, गाजर, खीरा, गोभी का सेवन करने से रक्तचाप सामान्य हो जाता है।

(गूगल के माध्यम से)